

## एक पद में उत्तर दें—

- |  |                         |
|--|-------------------------|
| 1. अग्निं दृष्ट्वा के पलायिता?             | उत्तर- धूर्ता!          |
| 2. कतिः पुरुषा! सुप्ता आसीत्?              | उत्तर- चत्वारः!         |
| 3. एकः पुरुषः किम् अपदत्?                  | उत्तर- कथामां केवलम्    |
| 4. द्वितीयः पुरुषः किम् अपदत्?             | उत्तर- गृहे अजिनकनोभ्यः |
| 5. वीरेश्वरः कः आसीत्?                     | उत्तर- मन्त्री          |
| 6. तस्मै स्वाभाकः कीदृशः आसीत्?            | उत्तर- कारुणिकः दानशीलः |
| 7. अलस कथामाः कथाकारः कः?                  | उत्तर- विहापरीः         |
| 8. अलस कथा कस्मान् श्रव्यात् उद्धृतोऽस्मि? | उत्तर- पुरुष परीक्षामाः |
| 9. वीरेश्वरो मन्त्री कुत्र आसीत्?          | उत्तर- मिथिलामा         |
| 10. केषाम् उल्लासं कृत्वा तदपरिमृजं        | उत्तर- अलसानाम्         |
| वर्तुली वभुव -                             |                         |
| 11. के कृत्रिमालस्यं दर्शयित्वा भोजनं      | उत्तर- धूर्ता!          |
| गृह्णन्ति -                                |                         |
| 12. तत्रैव कति पुरुषाः सुप्ताः? -          | उत्तर- चत्वारः          |

## अलस कथा के श्लोकों का अर्थ -

1. निर्गतानां च सर्वेषामलसो प्रथमो मतः।

किञ्चित् श्रमत्रे कर्तुं जह्वराणाऽपि वह्निना ॥

अर्थ- सभी क्रियाक्षिणों में आलसियों का प्रथम स्थान होता है क्योंकि वह श्रम के ~~अन्विता~~ अग्नि से पीड़ित होकर स्वयं के लिए कुछ नहीं कर पाता है।

2. स्थितिः सौ कार्यमूला हि सर्वेषामपि संहते।

सजामीनां सुरवं दृष्ट्वा केन धावन्ति जनकः ॥

अर्थ- सुविधा पूर्वक स्थिति सभी लोग चाहते हैं, क्योंकि अपनी जाति के सुरवों को देखकर कौन जीव नहीं दौड़ जाते हैं? अर्थात् सभी जीव दौड़ जाते हैं।

3. परिरंज गतिः स्त्रीणां बालानां जननी गतिः।

नालसानां गतिः कामिलोके कारुणिकं विना ॥

अर्थ- स्त्रियों की गति अर्थात् हर सुविधाओं की पूर्ति करने वाला उसका पति होता है, वन्ध्यों की गति उसकी माता होती है, परन्तु दया के बिना आलसियों की कोई गति नहीं होती है।



1. प्रश्न- अलस कथा से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर- अलस कथा से हमें यही शिक्षा मिलती है, कि अलस्य अनुष्य के शरीर का महान् शत्रु होता है, तथा परिश्रम से बड़ा कोई मित्र नहीं होता है। परिश्रम करने वाले कभी दुख का सामना नहीं करते। अतः हमें आलस्य को त्याग कर परिश्रम करना चाहिए।

2. प्रश्न- वीरेश्वर कौन थे? तथा कैसे स्वभाव के थे?

उत्तर- वीरेश्वर मिथिला के मन्त्री थे। वीरेश्वर स्वभाव से दयालु और दानशील थे सभी क्रिमाहीनों को भोजन एवं वस्त्र उसके इच्छानुसार देते थे। उसी के वीच में आलसियों को भी भोजन एवं वस्त्र देते थे।

3. प्रश्न- चारो आलसी पुरुषों को वहाँ के कर्मचारियों ने आग से कैसे जलाया?

उत्तर- चारो आलसी पुरुषों को आपस में वर्तालाप को सुनकर उसे आग से जल जाने के भय से हाँथ एवं केश पकड़ कर अलसशाला से बाहर किया।

4. प्रश्न- "नालखानों गति!" कारुणिकं बिना" क्यों कहा गया है? -

उत्तर- संसार में विभिन्न प्रकार के लोग होते हैं जिसमें कोई परिश्रमी तो कोई अलसी। परिश्रमी व्यक्ति अपना स्वयं गति होता है, पन्थों की गति में होता है, रिश्तों के आवश्यकता की पूर्ति करने वाला उसका पति होता है। परन्तु दमा के बिना इस संसार में आलसियों की कोई गति होती है।